ज्योति-स्वरूप निराकार ही सबके स्नेह का आधार

आज भले ही हम भिन्न-भिन्न जाति-भेद, वर्ण-भेद, धर्म-भेद, रंग-भेद में जीते हों, भले ही हरेक के आराध्य भिन्न-भिन्न हों, भले ही वे खुद को दूसरों से भिन्न समझते हों, पर हम सभी के जो भी आराध्य हैं, वे सभी साकार हैं और उन सभी के तार कहीं न कहीं निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा से ही जुड़े हैं। तभी तो सभी ने परमात्मा के 'ज्योति-स्वरूप' को स्वीकारा और यही कहा, 'गॉड इज़ लाइट, गॉड इज़ वन, सबका मालिक एक'।

विश्व के प्रमुख धर्म-ग्रन्थों के सूक्ष्म अध्ययन से यह तथ्य स्वयमेव उजागर होता है कि सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा 'निराकार ज्योतिस्वरूप शिव' ही हैं। प्रायः सभी धर्मों के लोग कहते हैं कि परमात्मा एक है, वो सभी का पिता है और सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। आप देखेंगे कि भले ही हर एक धर्म के स्थापक अलग-अलग हैं परंतु हर एक धर्म के अनुयायी 'निराकार, ज्योति-स्वरूप परमात्मा शिव' की प्रतिमा (शिवलिंग) को किसी न किसी प्रकार से मान्यता देते हैं।

भारत में देखा जाता है कि सबसे प्राचीन ते प्राचीन मंदिर ज्योतिर्लिंगम परमात्मा शिव के ही दिखाये हुए हैं। जो समस्त भारत के हर कोने में स्थापित है।

भारत के हर कोने में शिव

पूर्व दिशा में जायेंगे तो सोमनाथ मिलता है अर्थात् सोमरस, अमृत देने वाला नाथ।

उत्तर में- **'अमरनाथ'** के रूप में उनकी पूजा होती है अर्थात् जो अमर आत्माओं का नाथ है। दक्षिण में - **श्रीराम ने शिव की पूजा की जिनकी आज 'रामेश्वरम' के रूप में पूजा होती है।** इसी तरह दिखाते हैं कि कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत युद्ध के पहले स्वयं **श्रीकृष्ण ने भी 'थानेश्वर सर्वेश्वर' की स्थापना कर उनकी पूजा की।**

पाँचो खंडों में निराकार की यादगार

भारत के अलावा जापान में जायेंगे तो जो शिकोनिज़म् सेक्ट वाले हैं वे एक पत्थर, जिसे 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते, उसका ध्यान लगाते हैं। जिसका नाम दिया है - **'चिंकोनशेकी'।**

जीसस ने भी कहा - 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। सिक्ख धर्म में भी देखें तो **गुरुनानक देव ने भी यही कहा कि 'एक ओंकार निराकर'।**

मुस्लिम धर्म में परमात्मा को 'नूर-ए-इलाही' कहा गया है। 'नूर-ए- इलाही' अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, ज्योतिस्वरूप कहा।

पारसियों के अग्यारी में जायेंगे तो वहाँ पर **'होली फायर'** मिलता है। रोम में शिवलिंग को **'प्रियपस'** कहते थे। चीन में शिवलिंग को **'हुवेड-हिफुह'** कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को **'शिउन'** कहा जाता था। मिस्र में **'सेवा'** और फिजी में **'सेवा'** या **'सेवाजिया'** नाम से पूजते हैं।

फ्रांस के गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। **यूनान में शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित रहा है। स्याम-थाइलैंड में भी 'एकोनिस' और 'ऐस्टरगेरीस' नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को 'बेलफेगो' कहते हैं।**

सभी की भावना.. कल्याण हो

अनेक देशों और धर्मों आदि में शिवलिंग की पूजा का उल्लेख करके यह स्पष्ट है कि एक समय था जब सभी धर्मों और देशों के लोग इसे अशरीरी अथवा निराकार परमपिता परमात्मा की प्रतिमा के रूप में मानते थे। 'शिव' का अर्थ ही होता है 'कल्याणकारी', और सभी चाहते हैं कि सर्व का कल्याण हो, सबका भला हो, तभी तो सभी ने उनको माना भी और स्वीकारा भी। इसीलिए हम देखते हैं कि भले ही परमात्मा के लिए नाम और शब्द अलग-अलग हैं, लेकिन मान्यता सभी ने एक निराकार ज्योतिस्वरूप को ही दी, जिसकी ही यादगार हर स्थान पर पाई जाती है।

परमात्मा से महापरिवर्तन का नया दौर

भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का नया दौर चल चुका है। और आपको आश्चर्य लगेगा, परंतु इसका बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसे पवित्र स्थान माउण्ट आबू में परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दू अपने साकार माध्यम, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस महापरिवर्तन में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे गौतम बुद्ध जी ने कहा कि इच्छाएं ही मनुष्य के दुःख का कारण हैं, तो बस, हमें इच्छाएं कम करनी हैं। उसके लिए आत्मा की खुराक को समझना है। क्योंकि आत्मा सतोगुणी है, इसकी मानवीय-इच्छाएं इन्द्रियों के असंयम के आधार से हैं। इसलिए हे आत्माओं! बस अपने को आत्मा

समझकर चलना, कार्य करना है। शक्ति के लिए बार-बार परमात्मा से जुड़ना है। यही परमात्मा हमसे कहते, और इसी के आधार से पूरे विश्व को एक नये दौर में ले जाते हैं। यह पूर्णतः स्वैच्छिक है। आप भी क्यों नहीं इस विधि को अपनाकर देखते हैं! महापरिवर्तन का यह दौर बस चंद दिनों का है। हम सभी के पिता शिव निराकार परमात्मा आपको भी यह मौका देना चाहते हैं कि आओ... आपको भी ऐसे पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ बिना मेहनत सब कुछ मिल जायेगा। कुछ नहीं करना है वहाँ, लेकिन उसके लिए पुरुषार्थ करना है यहाँ।

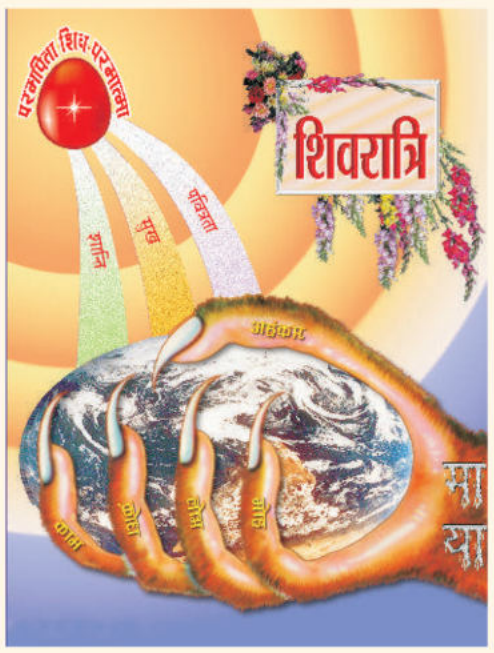

वर्तमान में परमात्मा शिव की आवश्यकता... !!!

आज मानव-इतिहास पुनः एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुंचा है जहां एक ओर मानव-उत्थान की अनंत संभावनायें हैं तो दूसरी ओर उसके समूल विनाश की पूरी तैयारी! विज्ञान और तकनीकी प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानवों के हाथ का खिलौना बनी हुई है। उसने मानव-जाति को ऐसे बारूद की ढ़ेरी पर ला खड़ा किया है जिसमें किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। प्रकृति पर विजय पाने के हर्षोल्लास में मानव इतना पागल हो गया है कि उसे स्वयं का होश न रहा है। अपने मूल स्वभाव- शांति, प्रेम, आनंद व आत्मज्ञान से उसका सम्पर्क बिल्कुल ही टूट चुका है। सर्व भौतिक साधनों के होते भी मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है और नींद के लिए गोलियां लेनी पड़ रही हैं। वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण व ध्वनि-प्रदूषण से मनुष्य परेशान अवश्य है परंतु वह इन प्रदूषणों को रोकने में असमर्थ है क्योंकि इन सबके पीछे जो मानव-मस्तिष्क का प्रदूषण है वह बंद नहीं हो रहा है। मानव-समस्याएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जहाँ राष्ट्रों के बीच तनाव बना हुआ है वहां प्रत्येक राष्ट्र के अंदर भी शासक और शासित के सम्बंध ठीक नहीं हैं। अनुशासन का हर क्षेत्र में सर्वथा अभाव है। तनाव हर क्षेत्र की सामान्य बात हो गई है। इस प्रकार शिव परमात्मा के आने का यह अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य कर भी रहे हैं। वे सबकी श्रेष्ठ तकदीर जगा रहे हैं। कहीं ये सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। मनुष्य की वास्तविक उन्नति, कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने ही के द्वारा होती है। ऐसे में सर्व क्षेत्र की सर्व-प्रणाली को श्रेष्ठ व सुंदर बनाने के लिए ही परमात्मा की ज़रूरत है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर, अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचें और उस भाग्यविधाता परमात्मा शिव से रिश्ता जोड़ लें।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

[स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता]

सम्पर्क करें : ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, आनंद भवन, शांतिवन,राज.-307510, मो.- 9414154344, 9414006096, 9414172087, ई.मेल- omshantimedia@bkivv.org, omshantimedia.acct@bkivv.org